और न ही बुद्धि स्थिर रहती है तथा जिसकी बुद्धि स्थिर नहीं है, उसको शान्ति भी नहीं होती। शान्ति के बिना सुख तो किस प्रकार से होगा? ।।६६।।

तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित हुए बिना शान्ति की कोई सम्भावना नहीं हो सकती। पाँचवें अध्याय (५.२९) से सिद्ध हुआ है कि यथार्थ शान्ति तभी सुलभ हो सकती है जब यह जान लिया जाय कि श्रीकृष्ण सम्पूर्ण यज्ञ-तप के एकमात्र भोक्ता हैं, सब लोकों के परम ईश्वर हैं और प्राणीमात्र के सुहृद हैं। अतः जो कृष्णभावनाभावित नहीं है, उसके मन का कोई परम लक्ष्य नहीं हो सकता। मन की चंचलता का एकमात्र कारण परम लक्ष्य का न होना है। श्रीकृष्ण परम भोक्ता, ईश्वर और सबके सुहृद हैं—इस निश्चय से एकाग्र हुए चित्त में शान्ति स्वतः सुलभ हो जाती है। अतएव जो श्रीकृष्ण के सम्बन्ध के बिना कार्य करता है, वह जीवन में शान्ति तथा पारमार्थिक उन्नति का कितना भी आडम्बर क्यों न करे, वास्तव में सदा दुःखी तथा अशान्त ही रहेगा। कृष्णभावना स्वयं प्रकट होने वाली वह शान्तिमयी अवस्था है, जिसकी प्राप्ति श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में ही हो सकती है।

25.2

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।।६७।।

इन्द्रियाणाम्=इन्द्रियों के; **हि**=ही; **चरताम्**=साथ विचरण करता हुआ; **यत्**=जिस इन्द्रिय के साथ; **मनः**=मन; **अनुविधीयते**= निरन्तर रहता है; **तत्**=वह; **अस्य**=इसकी; **हरति**=हर लेती है; **प्रज्ञाम्**=बुद्धि को; **वायुः**=वायु; **नावम्**=नौका को; **इव**=जैसे (हर लेता है); **अम्भसि**=जल में।

अनुवाद

जिस प्रकार प्रचण्ड वायु जलगामी नौका का अपहरण कर लेती है, उसी भाँति जिस भी इन्द्रिय पर मन केन्द्रित हो, वह एक ही इन्द्रिय मनुष्य की बुद्धि को हर लेती है।।६७।।

तात्पर्य

यह नितान्त आवश्यक है कि सभी इन्द्रियाँ भगवत्सेवा में तत्पर रहें; विषयों में लगी हुई एक इन्द्रिय भी भक्त को परमार्थ-पथ से भ्रष्ट करने के लिए पर्याप्त है। जैसा महाराज अम्बरीष के जीवन-चरित्र से स्पष्ट है, सभी इन्द्रियों को कृष्णभावना के परायण करें; मनोनिग्रह की यथार्थ विधि यही है।

26.2

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।६८।।

तस्मात्=इसलिए; **यस्य**=जिसकी; **महाबाहो**=हे महाबाहु; **निगृहीतानि**=वश में की हुई हैं; **सर्वशः**=सब प्रकार से; **इन्द्रियाणि**=इन्द्रियाँ; **इन्द्रियार्थेभ्यः**=इन्द्रियविषयों से; **तस्य**=उसकी; **प्रज्ञा**=बुद्धि; **प्रतिष्ठिता**=स्थिर है।